Seat No. ________ No. of printerd page:04

[A-37]

**SARDAR PATEL UNIVRSITY**

**T Y BA (External) Examination**

**Friday, 27th April 2018**

**10.00 am – 1.00 pm**

**HIN-306 Hindi-VI**

प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता

कुल गुण :१००

नोटः हिन्दी में शिरोरेखा लगाना अपेक्षित है।

प्र-१ निम्नलिखित में से किन्हीं तीन की संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए। (१८)

क) घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ, जिहि भाँतिन हौं दुख-सूल सहौं।
नहि आवनि औधि न रावरी आस, इते पर एक सी बाट चहौं।
यह देखि अकारन मेरी दसा, कोउ बूझै तो ऊतर कौन कहौं।
जिय नेकु विचारि कै देहु बताय, हहा पिय दूरि ते पाँय गहौं।।

अथवा

क) जासों प्रीति ताहि निठुराई सों निपट नेह,
कैसें करि जिय की जरनि सो जताइयै।
रैन-दिन चैन को न लेस कहूँ पैये, भाग
आपने ही ऐसे, दोष काहि धौं लगाइयै।।

ख) डिगति उर्वि अति गुर्वि सर्व पब्बै समुद्र सर।
ब्याल बधिर तेहि काल, बिकल दिगपाल चराचर।।
दिग्गयंद लरखरत, परत दसकंठ मुक्खभर।
सुरविमान हिमभानु भानु संघटित परस्पर।।
चौंके बिरंचि संकर सहित, कोल कमठ अहि कलमल्यौ।
ब्रह्माण खंड कियो चंड धुनि जबहिं राम सिवधनु दल्यौ।।



(P.T.O.)

अथवा

ख) बड़े बिकराल भालु, वानर बिसाल बड़े,
तुलसी बड़े पहार लै पयोधि तोपिहैं।
प्रबल प्रखंड बरिबंड बाहुबंड खंडि,
मंडि मेदिनी को मंडलीक-लीक लोपिहैं।
लंकदाहु देखे न उछाहु रह्यो काहुन को,
कहैं सब सचिव पुकारि पाँव रोपि हैं।
बाचिहै न पाछे त्रिपुरारिहू मुरारि हू के,
को है रन रारि को जौं कोसलेस कोपिहैं?

ग) दिन दहुँ चहुँ के कारणैं, जैसे सैंबल फूले।
झूठी सूँ प्रीति लगाइ करि, साँचे कूँ भूले।
जो रस गा सो परहर्या, बिड़राता प्यारे।
आसति कहूँ न देखिहूँ, बिन नाँव तुम्हारे।।
साँची सगाई राँम की, सुनि आतम रे।।
नरकि पड़े नर बापुड़े, गाहक जस तेरे।।
हंस उड्या चित चालिया, सगपन कछू नाहीं।
माटी सूँ माटी मेलि करि, पीछैं अनखाँही।।
कहै कबीर जग अंधला, कोई जन सारा।
जिनि हरि मरम न जाँणिया, तिनि किया पसारा।।

अथवा

ग) राम राइ तेरी गति जाँणि न जाई।
जो जस करिहै सो तस पड़है, राजा राँम नियाई।
जैसी कहै करै जो तैसी, तो तिरत न लागै बारा।
कहता कहि गया सुनतान सुणि गया, करणीं कठिन अपारा।।
सुरहि तिण चरि अमृत सरबै, लेर भवंगहि पाई।

अनेक जतन करि निग्रह कीजै, विषै विकार न जाई।।

संत करै असंत की संगति, तासूँ कहा बसाई।

कहै कबीर ताके भ्रम छूटै, जे रहे राँम ल्यौ लाई।

प्र-२ 'विरह घनानंद के जीवन एवं काव्य का प्राण है'- इस कथन की चर्चा कीजिए। (१६)

अथवा

प्र-२ घनानंद के काव्य के भावपक्ष और कलापक्ष संबंधी विवेचन कीजिए।

प्र-३ कवितावली के काव्यस्वरूप को स्पष्ट कीजिए। (१६)

अथवा

प्र-३ कवितावली में चित्रित राम की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्र-४ 'कबीर एक रहस्यवादी कवि हैं' सोदाहरण समझाइए। (१६)

अथवा

प्र-४ कबीर का साहित्य समाज पर करारा व्यंग्य करता है-स्पष्ट कीजिए।

प्र-५ टिप्पणी लिखिए।

क) अमीर खुसरो अथवा विद्यापति

ख) जायसी अथवा भूषण

प्र-६ निम्नलिखित अतिलघुत्तरीय प्रश्नों में से किन्हीं १८ का अतिसंक्षिप्त उत्तर लिखें। (१८)

१) घनानंद हिन्दी साहित्य के किस धारा के कवि है?

२) मेघ से घनानंद की क्या कामना है?

३) घनानंद की शिक्षा किस भाषा में हुई थी?

४) घनानंद किस बात से अधिक दुखी थे?

५) घनानंद किस रस के प्रधान कवि है?

६) दिल्ली छोड़ने से पहले घनानंद ने क्या किया?

७) सुजान से घनानंद क्या संबंध था?

८) गोस्वामी तुलसीदास का जन्म कब और कहा हुआ था?

९) अरण्यकाण्ड में किसका चित्र खीचा गया है?

१०) अयोध्याकाण्ड में कुल मिलाकर कितने छंद है?

११) तुलसीदास ने अपनी रचनाओं को किस भाषा में लिखा है?

१२) सुंदरकाण्ड की कथा में कौन-से प्रसंग चित्रित हुए है?

१३) कवितावली के बालकाण्ड में मुख्य दो प्रसंग कौन से है?

१४) कवितावली के सात काण्डों के नाम लिखिए।

१५) कबीर किस काल के कवि थे?

१६) कबीर के काव्य-संग्रह का नाम क्या है?

१७) अनंतवास के अनुसार कबीर किस जाति के थे?

१८) कबीर के पुत्र और पुत्री का नाम क्या है?

१९) कबीर ने मुसलमानों से क्या ग्रहण किया?

२०) निर्गुण महिमा की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

२१) कबीर की भाषा किस प्रकार की है?

—X—